Toppersnotes®
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़

शिक्षक पात्रता परीक्षा

छतीसरगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल, सयपुर

भाग - 2

(प्राथमिक स्तर कक्षा 1-5)

हिन्दी भाषा

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्णमाला	1
2	संज्ञा	5
3	लिंग	7
4	वचन	12
5	सर्वनाम	15
6	विशेषण	17
7	क्रिया	20
8	कारक	23
9	संधि	26
10	समास	38
11	उपसर्ग	48
12	प्रत्यय	52
13	तत्सम व तद्भव शब्द	57
14	देशज एवं विदेशज शब्द	62
15	विलोम शब्द	66
16	पर्यायवाची शब्द	72
17	वाक्य के एक शब्द	77
18	अनेकार्थी शब्द	85
19	वाक्य एवं वाक्य प्रकार	89
20	वाक्य रचना	94
21	मुहावरे	98
22	लोकोक्तियाँ	106
23	भाषा–शिक्षण उपागम	113

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	भाषा दक्षता का विकास	115
25	भाषा कौशल	117
26	शिक्षण के अन्य कौशल	120
27	भाषा–शिक्षण में चुनौतियाँ	122
28	आंकलन	123
29	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	128
30	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	130
31	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	132

1 CHAPTER वर्णमाला

➢ किसी भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसे छोटे भागों में और न तोड़ा जा सकता हों, ध्वनि कहलाती है, ध्वनि को वर्ण कहा जाता है। **वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला** कहा जाता है।

➢ हिंदी वर्णमाला में मूलत: कुल 44 वर्ण होते हैं जिन्हें 2 भागों में विभक्त गया है।

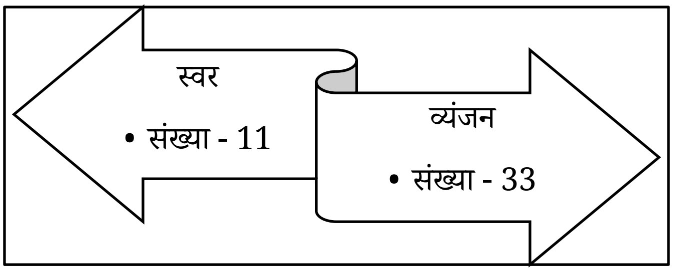

क्या आप जानते हैं?
वर्णों को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं। वर्णों की संख्या कहीं 52 तो कहीं 44 मानी गयी है। सरकारी वर्णमाला में ड़, ढ़, श्र को स्थान नहीं दिया गया है, अत: वहाँ कुल वर्णों की संख्या 53-3 = 49 ही मानी गयी है।
सर्वमान्य मत - 44 वर्ण हैं। (11 स्वर तथा 33 व्यंजन)

वर्णों का वर्गीकरण

➢ **श्वास वायु के आधार पर**

(i) अनुनासिक – अनुनासिक वर्णों की ध्वनि में श्वास वायु मुख के साथ नाक से बाहर निकलती है। अनुनासिक वर्णों में चन्द्रबिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे – अँ, इँ, प्रत्येक वर्ग का पाँचवां वर्ण।

(ii) अल्प प्राण – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय वायु का कम प्रवाह होता है, अल्प प्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का 1, 3 व 5 वाँ वर्ण।

(iii) महाप्राण – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु का प्रवाह होता है, महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण।

➢ **स्वर तत्रों की स्थिति व कम्पन्न के आधार पर**

(i) घोष/सघोष :- घोष का शाब्दिक अर्थ है नाद या गूंज। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वर तंत्र में कंपन (गूंज उत्पन्न होना) होता है, उन्हें घोष वर्ण कहते हैं।
घोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के अन्तिम तीन वर्ण घोष वर्ण कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं। इनकी कुल संख्या तीस है।

(ii) अघोष :- जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु में कम्पन नहीं होता अतः कोई गूंज उत्पन्न नहीं होती वे वर्ण अघोष वर्ण कहलाते हैं।
अघोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के पहले और दूसरे वर्ण अघोष वर्ण होते हैं, इनकी संख्या तेरह है।

स्वर

➢ ऐसी ध्वनियाँ अथवा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अन्य किसी ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं।

➢ स्वर स्वतंत्र एवं पूर्ण होते हैं। **स्वर 11 होते हैं** - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

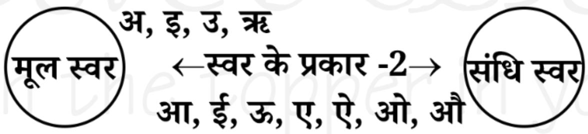

➢ **इन्हें मूलत: 3 भागों में बांटा जा सकता है।**

(i) ह्रस्व स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगे उन्हें ह्रस्व स्वर कहा जाता है। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। जैसे - अ, इ, उ।

(ii) दीर्घ स्वर - जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगे उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इन्हें मात्रा द्वारा भी दर्शाया जाता है। ये दो स्वरों को मिला कर बनते हैं अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। जैसे – आ, ई, ऊ।

(iii) प्लुत स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ सवा से भी अधिक समय लगता है वे प्लुत स्वर कहलाते हैं।

- **जिह्वा के आधार पर स्वर**
  - **(i) अग्र स्वर** –स्वर जिसमे जीभ का अग्र भाग प्रयोग में आता हैं । - इ, ई, ए, ऐ
  - **(ii) मध्य स्वर** – जिसमे जीभ का मध्य भाग प्रयोग में आता हैं। - अ
  - **(iii) पश्चस्वर** – जिसमे जीभ का पश्च भाग प्रयोग में आता हैं । - आ, उ, ऊ, ओ, औ

वर्ण	उच्चारण स्थान
अ, आ	कंठ
इ, ई	तालु
ऋ	मूर्धा
उ, ऊ	ओष्ठ
ए, ऐ	कंठ + तालव्य
ओ, औ	कंठ + ओष्ठ

महत्वपूर्ण तथ्य –

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है

- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है

समानाक्षर स्वर

- ✓ आ – अ + अ
- ✓ ई – इ + इ
- ✓ ऊ – उ + उ

संधि स्वर

- ✓ ए – अ + इ
- ✓ ऐ – अ + ए
- ✓ औ – अ + ओ

- अंग्रेज़ी से गृहित स्वर – ऑ (डॉक्टर, कॉलेज)

व्यंजन

- स्वरों की सहायता से बोली जाने वाली ध्वनियों को ही व्यंजन कहा जाता है।
- जब हम क बोलते हैं तब उसमें क् + अ मिला होता है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोला जाता है।
- व्यंजन अस्वतंत्र एवं अपूर्ण होते हैं।
- व्यंजन को **मूलतः 3 भागों** में बांटा जा सकता है।

व्यंजन के मूलत: तीन प्रकार हैं

- **स्पर्श - संख्या : 25**
- **अंत:स्थ - संख्या : 4**
- **ऊष्म - संख्या : 4**

TopperNotes
Unleash the topper in you

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों को आठ भागों में बांटा गया है है:

1. **स्पर्शी** : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में फेफड़ों सद्वारा छोड़ी गयी वाली हवा वाग्यंत्र के किसी अवयव का स्पर्श करके बाहर निकलती है, स्पर्शी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे – क् ख् ग् घ्, ट्, ठ ड ढ़, त्, थ् ध, प् फ् ब् भ्
2. **संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तब वायु उनसे घर्षण/संघर्ष करती हुई बाहर निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - श, ष्, स्, ह, ख्, ज, फ्
3. **स्पर्श संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में स्पर्श का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है, वे स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - च्, छ, ज्, झ्।
4. **नासिक्य :** जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख अंश नाक से निकलता है। जैसे - ङ्, ञ, ण, न, म्।
5. **पार्श्विक :** जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग मसूड़े को छूता है और वायु पार्श्व आस-पास से निकल जाती है, वे पार्श्विक हैं - जैसे - 'ल्'।

6. **प्रकम्पित :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा दो-तीन बार कंपन करती है, वे प्रकंपित व्यंजन कहलाते हैं। जैसे- 'र'

7. **उत्क्षिप्त :** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक झटके से ऊपर उठकर नीचे गिरती है तो वह उत्क्षिप्त ध्वनि कहलाती है। जैसे - ड्, ढ़

8. **संघर्ष हीन :** जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा बिना किसी संघर्ष या अवरोध के बाहर निकलती है वे संघर्षहीन ध्वनियाँ कहलाती हैं। जैसे-य, व। इनके उच्चारण में स्वरों से मिलता जुलता प्रयत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।

वर्ग	**स्पर्श वर्ण**					**उच्चारण स्थान**
क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	दंत
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ
प्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	
	अघोष	अघोष	सघोष	सघोष	सघोष	घोष

व्यंजन प्रकार	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**
अंत:स्थ व्यंजन	य	तालु
	र	दंत
	ल	दंत
	व	दंत + ओष्ठ
ऊष्म व्यंजन	श	तालु
	ष	मूर्धा
	स	दंत
	ह	कंठ

संयुक्त व्यंजन

- हिन्दी में तीन संयुक्त व्यंजन होते हैं। ये दो व्यंजनों के मेल से बने होते हैं।

क्ष = क् + ष्
त्र = त् + र् + अ
ज्ञ = ज् + ञ् + अ
श्र = श् + र् + अ

अयोगवाह

- वे वर्ण जो न तो स्वर होते है और न ही व्यंजन होते है उन्हें अयोगवाह (अं अः) कहा जाता है।
- अं को अनुस्वार (नाक), अँ को अनुनासिक (नाक मुख) और अः को विसर्ग (कंठ) कहा जाता है ।

वर्णों का उच्चारण स्थान

क्र. सं.	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**	**उच्चारण ध्वनि**
1	क वर्ग, अ, आ और विसर्ग	कंठ कोमल तालु	कंठ्य
2	च वर्ग, इ, ई, य, श	तालु	तालव्य
3	ट वर्ग, ऋ, र, ष	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
4	त वर्ग, लृ, ल, स	दन्त	दन्त्य
5	प वर्ग, उ, ऊ,	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6	अ, ङ, ञ, ण, न्, म्	नासिका	नासिक्य
7	ए ऐ	कंठ तालु	कंठ - तालव्य
8	ओ, औ	कंठ ओष्ठ	कठोष्ठ्य
9	व	दन्त ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य
10	ह	स्वर यन्त्र	अलिजिह्वा

महत्वपूर्ण तथ्य –

- हिंदी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिंदु) का प्रयोग किया जाता है जिन्हें आगत / गृहीत व्यंजन कहा जाता है।

- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है

  क़ – क़रीब

  ख़ – ख़राब

  ग़ – ग़म

  ज़ – ज़रा

  फ़ – फ़न (अंग्रेज़ी)
- नुक्ता / आगत व्यंजनों का आगमन अरबी/फ़ारसी, अंग्रेज़ी भाषा से हुआ है।
- नुक्ता व्यंजन की शुरुआत का श्रेय हिंदी विद्वान “विप्रसाद सितारे हिन्द” को जाता है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य

- हिंदी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अ: (विसर्ग) ध्वनियाँ हैं को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वर में जोड़ा जाता है न ही व्यंजन में
- अनुस्वार (अं) व विसर्ग (अ:) को अयोगवाह नाम देने का श्रेय किशोरी दास वाजपेयी को जाता है
- तालु उच्चारण स्थान पर आने वाले वर्णों को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागों में विभाजित किया गया है
- वर्त्स वर्णों में न, ल, स को शामिल किया गया है इनकी कुल संख्या 4 होती है
  1. जिह्वा
  2. अधरोष्ठ (नीचे का होठ)
  3. स्वर तंत्रियाँ
  4. कोमल तालु

- काकल वर्ण के अंतर्गत विसर्ग (:) को शामिल किया गया है
- **रकार / रेफ या र सम्बंधित नियम**

  (i) नियम 1: यदि र के बाद व्यंजन आए तो र को उसी व्यंजन वर्ण के के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजनवर्ण के ऊपर लिखा जाता है

  जैसे – कर्म, धर्म, स्वर्ग, पुनर्जन्म आदि

  (ii) नियम 2: यदि र से पहले व्यंजन वर्ण आये तो र को उसी व्यंजन वर्ण के मध्य में लिखा जाता है

  जैसे – प्रकाश, भ्रष्ट, प्रभात, प्रेम, क्रम आदि
- **उत्क्षिप्त वर्ण का नियम**
  - ✓ **नियम 1 :** यदि शब्द की शुरुआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

    जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया आदि
  - ✓ **नियम 2:** यदि शब्द के अंतर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है

    जैसे – पण्डित, बुड्ढा, खण्ड, मण्डल आदि

    नोट – उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिंदु आती है जैसे – लड़ाई, सड़क,पकड़ना, पढ़ाई आदि

2
CHAPTER

संज्ञा

- वे विकारी शब्द जो किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव, अवस्था, गुण या दशा के नाम का बोध करते हों संज्ञा कहलाते हैं।
- संज्ञा शब्द दो शब्दों **सम्** + **ज्ञा** से मिलकर बना है अर्थात् वह प्रत्येक वस्तु (सजीव या निर्जीव) जिसका कोई नाम है वह संज्ञा है।

संज्ञा के प्रकार

- संज्ञा के मूलत: 3 भेद /प्रकार हैं। जो व्युत्पत्ति के आधार पर हैं। परन्तु दो अन्य भेद अर्थ के आधार पर भी माने गए है।

व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के प्रकार

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के नाम का बोध हो, उन्हें'**व्यक्तिवाचक संज्ञा'** कहते हैं।
   उदाहरण : अभिषेक, जयपुर, रमा, रहीम , अरावली ,समुद्रगुप्त, गंगा, कामायनी, सुशील आदि।
2. **जातिवाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार की सम्पूर्ण जाति, वर्ग अथवा समुदाय का बोध हो, उन्हें'**जातिवाचक संज्ञा'** कहते हैं। इसमे मुख्यत: समूहवाचक शब्द आते हैं ।
   उदाहरण : पुरुष, शहर, पशु, मुनष्य, सेना, पर्वत, सभा, गाय, डॉक्टर , नगर , बालक, लडकी, आदमी, दोस्त, पुस्तक , पहाड़ , लड़का, जुलाहा, मंत्री, बहन, लेखक आदि।
3. **भाववाचक संज्ञा :** जिन संज्ञा शब्दों सें प्राणियों और वस्तुओं के गुण-दोष, धर्म, अवस्था, भाव और व्यापार आदि का बोध हो, उन्हें **'भाववाचक संज्ञा'** कहते है।
   उदाहरण : अच्छाई, मिठास, गर्मी, बुढ़ापा, सुन्दरता, नारीत्व, चतुरता, बचपन, दाम, क्रोध, गर्व, दौड़, अनुशासन इत्यादि ।

भाववाचक संज्ञा का निर्माण

- भाववाचक संज्ञा का निर्माण 5 प्रकार से किया जा सकता है।

1. **जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा**
   (i) **'ता' प्रत्यय:** मानव-मानवता, मित्र-मित्रता, प्रभु-प्रभुता, पशु-पशुता।
   (ii) **त्व प्रत्यय :** पशु-पशुत्व, मनुष्य-मनुष्यत्व, कवि-कवित्व, गुरु-गुरुत्व।
   (iii) **पन :** लड़का-लड़कपन, बच्चा-बचपन ।
   (iv) **अ :** शिशु-शैशव, गुरु-गौरव, विभु-वैभव।
   (v) **इ :** भक्त-भक्ति ।
   (vi) **ई :** नौकर-नौकरी, चोर-चोरी।
   (vii) **आपा :** बूढ़ा-बुढ़ापा, बहन-बहनापा।
2. **सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा :**
   (i) **त्व : अपना -** अपनत्व, निज निजत्व, स्व-स्वत्व ।
   (ii) **पन : अपना -** अपनापन, पराया-परायापन ।
   (iii) **कार : अहं** - अहंकार।
   (iv) **स्व: सर्व** - सर्वस्व ।
3. **विशेषण से भाववाचक संज्ञा :**
   (i) **आई :** साफ-सफाई, अच्छा अच्छाई, बुरा-बुराई।
   (ii) **आस :** खट्टा-खटास, मीठा-मिठास ।
   (iii) **ता :** उदार-उदारता, वीर वीरता, सरल-सरलता ।
   (iv) **य :** मधुर -माधुर्य, सुन्दर-सौन्दर्य, स्वस्थ-स्वास्थ्
   (v) **पन :** खट्टा- खट्टापन, पीला-पीलापन।
   (vi) **त्व :** वीर -वीरत्व।
   (vii) **ई :** लाल लाली।

4. **क्रिया से भाव-वाचक संज्ञा :**

(i) **अ**: खेलना-खेल, लूटना लूट, जीतना-जीत।

(ii) **ई:** हँसना-हँसी।

(iii) **आई:** चढ़ना चढ़ाई, पढ़ना-पढ़ाई, लिखना-लिखाई।

(iv) **आवट:** आवट-बनाना-बनावट, थकना-थकावट, लिखना-लिखावट।

(v) **आव :** चुनना-चुनाव।

(vi) **आहट:** घबराना-घबराहट, गुनगुनाना-गुनगुनाहट ।

(vii) **उडना** : उड़ान।

(viii) **न** : लेना-देना लेन-देन, खाना-खान।

5. **अव्यय से भाववाचक संज्ञा**

(i) **ई :** भीतर-भीतरी, ऊपर, ऊपरी दूर-दूरी।

(ii) **य :** समीप सामीप्य ।

(iii) **इक :** परस्पर -पारस्परिक, व्यवहार - व्यावहारिक ।

(iv) **ता :** निकट निकटता, शीघ्र शीघ्रता।

अर्थ के आधार पर संज्ञा के प्रकार

1. **समूहवाचक संज्ञा :** जिस संज्ञा शब्द से किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे **समूहवाचक संज्ञा** कहते हैं। जैसे – सभा, परिवार, कक्षा, दल, गिरोह, संघ, गुच्छा, पुंज, ढेर।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा:** जिन संज्ञा शब्दों से किसी ऐसे पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है जिसे हम नाप – तौल सकते हैं लेकिन गिन नहीं सकते उन्हें द्रव्य वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, पानी, पेट्रोल, सोना, लोहा, कोयला, लकड़ी, कागज, चीनी, आटा, घास।

क्या आप जानते हैं?

- जब कभी द्रव्यमान संज्ञा शब्द बहुवचन के रूप में द्रव्य के प्रकारों का बोध कराता है।, तब वह जातिवाचक संज्ञा बन जाता है। जैसे - यह फर्नीचर कई प्रकार के लकड़ियों से बना है।
- जब समूहवाचक संज्ञा बहुत सी समूह ईकाइयों को प्रकट करता है, तब बहुवचन में प्रयुक्त होता है। जैसे दोनों सेनाएँ आपस में जमकर लड़ी।
- जब कभी भाववाचक संज्ञा शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते है, तब वे जातिवाचक संज्ञा बन जाते है। जैसे बुराईयों से बचकर रहो।
- कुछ भाववाचक शब्द मूल शब्द है। जैसे प्रेम, घृणा, क्रोध आदि।
- अधिकांश भाववाचक शब्द यौगिक होते है -गरीब-गरीबी। लड़का-लड़कपन
- भावचावक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, अव्यय और क्रिया शब्दों के अंत में त्व, ता, वन, पा, आस, आई, वट, हट इत्यादि प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है। जैसे मित्र-मित्रता, अपना-अपनत्व, लम्बा-लम्बाई आदि।

Unleash the topper in you

3 CHAPTER

लिंग

- जिन शब्दों से किसी विकारी शब्द के पुरुष या स्त्री जाति के होने का बोध हो, लिंग कहलाता हैं।
- **लिंग शब्द** का अर्थ है- 'चिह्न अथवा निशान'।
- अतः जिस चिह्न से इस बात का पता चले कि 'संज्ञा' स्त्री जाति की है या पुरुष जाति की, उस चिह्न को लिंग कहते हैं।

लिंग के प्रकार

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
ऐसे शब्द जिनके द्वारा किसी विकारी शब्द के पुरुष जाति से संबंधित होने का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।	गोविन्द, अध्यापक, मेरा, काला, जाता आदि।	ऐसे शब्द जिनके द्वारा किसी विकारी शब्द के स्त्री जाति से संबंधित होने का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।	जैसे- सीता, अध्यापिका, मेरी, काली, जाती।

लिंग की पहचान / लिंग निर्णय संबंधी नियम

- लिंग की पहचान शब्दों के व्यवहार से होती है। कुछ शब्द सदा पुल्लिंग रहते हैं तो कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग।
- कुछ शब्द परम्परा के कारण पुल्लिंग या स्त्री लिंग में प्रयुक्त होते हैं।

नियम	उदाहरण	अपवाद
पुल्लिंग संबंधी नियम		
जिन संज्ञा शब्दो के अंत में 'अ' स्वर आता है, वे प्रायः पुल्लिंग होते है।	घर, वरदान, स्वराज्य, मान, भवन, प्रश्न, उत्तर, जलज, पंकज, दमन, पोषण, पवन, वन, क्रोध, दान, त्याग, गणित, चरित, गीत, संगीत, सुख, दुःख, व्यापार, विवाह, अकाल, स्वर्ग, सत्य चित्र, नेत्र, पत्र, फूल, फल, तन, मन, जल, थल, कर्म, धर्म, समाज, देश, संसार आदि।	सन्तान, पुलिस, सेना, फौज, सरकार आदि शब्द स्त्रीलिंग होते हैं ।
हिन्दी की 'आकारान्त' संज्ञाएँ प्रायः पुल्लिग होती है।	छाता, पैसा, चमड़ा, चश्मा, गुस्सा, पहिया, पटाखा, कपड़ा, बक्सा, लड़का, नाला, घड़ा।	
ना, आव, पन, आपा, त्व प्रत्ययों से बनने वाली संज्ञाएँ पुल्लिग होती है।	लड़कपन, बचपन, जगाना, हँसना, छिपाव, बचाव, बढ़ापा, मोटाप महत्त्व, अपनत्व ।	
दिन, महीना, ग्रह, देश, पर्वत, रत्न, धातु, शरीर के अवयवों,	**दिन के नाम :** सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शनिवार आदि। **महीनों के नाम :** चैत, बैशाख, अगहन, मार्च, अप्रैल, आदि।	**अपवाद** - जनवरी, फरवरी

अनाज, पेड़ तथा द्रव्यों नाम प्रायः पुल्लिंग होते है।	**ग्रहों के नाम :** शुक्र, शनि, मंगल, वरूण, नेप्च्यून आदि। **देशों के नाम :** भारत, चीन, अमेरिका, रूस, जापान आदि। **पर्वतों के नाम :** हिमालय, एंडीज, सह्याद्रि, विंध्य, नीलांचल आदि। **रत्नों के नाम :** पन्ना, हीरा, माणिक, मूँगा, मोती आदि। **धातुओं के नाम :** ताँबा, लोहा, सोना, सीसा, राँगा, पीतल, काँसा। **शरीर के अवयव :** कान, मुँह, दाँत, ओठ, मस्तक, अँगूठा, नाखून, पाँव, हाथ, सिर आदि। **अनाज के नाम :** चना, गेहूँ, चावल, धान, बाजरा, तिल आदि। **पेड़ के नाम:** पीपल, बड़, चीड़, आम, शीशम, अमरूद। **द्रव्यों के नाम :** पानी, घी, तेल, दही, शर्बत, काढ़ा	**अपवाद** – पृथ्वी **अपवाद** – चाँदी **अपवाद** कलाई, नाक, आँख, जीभ, खाल, बाँह **अपवाद -** ज्वार, अरहर, मूंग, सरसों, खेसारी **अपवाद -** लीची, नाशपाती, नारंगी, इमली, मलसौरी **अपवाद -** चाय, स्याही, शराब)
निम्नलिखित शब्द ऐसे है, जो सर्वदा पुल्लिंग होते है।	पशु, पक्षी, कौआ, तोता, मच्छर, बिच्छु, छबूँदर, खटमल साँप, गिरगिट, झींगुर, कीड़ा, गेंडा शब्द स्त्रीलिंग है।	
जिन शब्दों के अन्त में 'त्र' वर्ण आता है, वे बहुधा पुल्लिंग ही होते हैं	क्षेत्र, चित्र, नेत्र, शास्त्र, पात्र, चरित्र इत्यादि ।	
जिन शब्दों के अन्त में 'आस' होता है, वे प्रायः पुल्लिंग होते हैं	परिहास, विलास, उल्लास इत्यादि ।	
जिन शब्दों के अन्त में 'आर' आता है, वे प्रायः पुल्लिंग होते है	विस्तार, संसार,निराहार।	
जिन शब्दों के अन्त में 'वट' प्रत्यय लगते हैं, वे प्रायः पुल्लिंग होते हैं	महत्त्व, बनावट, स्वत्व, कवित्व, तिखावट आदि।	
स्त्रीलिंग संबंधी नियम		
इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते है।	रात्रि, निधि, जाति, समिति, नियुक्ति, शक्ति, छवि, नदी, नारी, गोष्ठी, कुंडली, बोली, चिट्ठी, लड़की, कहानी, कटोरी, रोटी, वस्तु, ऋतु, मृत्यु, आयु आदि।	अपवाद लघु, सेतु हेतु, पानी, मोती, हाथी कवि, मुनि, पति, ऋषि
संस्कृत के 'आकारान्त' शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते है।	लता, शोभा, सभा, प्रिया, दया, माया, क्षमा, लज्जा, कृपा, माला, क्षमता, रमा, ममता, कथा प्रार्थना, वेदना, रचना, इच्छा, आशा, रक्षा परीक्षा, योग्यता, संस्था, आस्था, ईर्ष्या, सुन्दरता, नम्रता, निराशा, अभिलाषा, घटना आदि।	
नदियों, लिपियों, बोलियों, तिथियों, भाषाओं, झीलों तथा नक्षत्रों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते है।	**नदियों के नाम :** गंगा, यमुना, सतलुज, रावी, ताप्ती, नर्मदा, सरस्वती **लिपियों के नाम :** देवनागरी, रोमन, गुरूमुखी। **बोलियों के नाम :** हिन्दी, अरबी, फारसी, अंग्रेजी। **तिथियों के नाम** : प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी, अमावस्या, पूर्णिमा, पहली **भाषाओं के नाम :** हिन्दी, तमिल, मराठी, पंजाबी, अंग्रेजी। **झीलों के नाम :** डलझील, विक्टोरिया झील **नक्षत्रों के नाम :** अश्विनी, रोहिणी, पृथ्वी आदि।	**अपवाद -** सोन, सतलज, सिंधु और ब्रह्मपुत्र

Unleash the topper in you

जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में ट, वट या हट होता है, वे प्रायः स्त्रीलिंग होते है।	झंझट, बनावट, चिकनाहट, लिखावट, आहट, घबराहट, सजावट, कड़वाहट आदि।	
खाने-पीने की चीजें तथा बनिये की दूकान की चीजें प्रायः स्त्रीलिंग होते है।	**खाने-पीने की चीजें :** कचौड़ी, पूरी, खीर, दाल, पकौड़ी, चपाती, तरकारी, खिचड़ी, रोटी, दाल, सब्जी। **बनिये की दूकान की चीजें :** केसर, सुपारी, हींग। लौंग, इलाइची, मिर्च, दालचीनी, हल्दी,	**अपवाद -** धनिया, जीरा, गरम-मशाला, नमक, तेजपता आदि
'ख' तथा 'इया' से अन्त होने वाले शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते है।	ईख, भूख, चीख, कोख, खटिया, लुटिया, कुटिया, चिड़िया आदि। -	
निम्नलिखित शब्द ऐसे है जो सर्वदा स्त्रीलिंग होते है।	मकरी, कोयल, मैना, गौरैया, मछली, मक्खी, लोमड़ी, गिलहरी, छिपकली, चील आदि।	
कुछ भाववाचक संज्ञाएँ जिनके अंत में 'आई', 'आस', 'ता', 'वत', 'वट', 'अ', और 'हट' आदि आते हैं, स्त्रीलिंग होती हैं ।	कमाई, बड़ाई, खटास, मिठास, मानवता, सुंदरता, विदाई, सफाई, मित्रता, कहावत, सजावट, झंझट, घबराहट आदि।	
संस्कृत की 'ना', 'नि' से अन्त होने वाली संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं	हानि, कल्पना, वेदना, ग्लानि, प्रार्थना आदि।	

<u>लिंग निर्णय के सूत्र :</u>

- जिस शब्द का लिंग ज्ञात करना हो उसका बहुवचन रूप बना लें।
- बहुवचन रूप के अंत में यदि 'आँ' या 'ऐं' आ रहा है तो वह शब्द स्त्रीलिंग है और यदि 'आँ' या 'ऐं' नहीं आ रहा है तो वह शब्द पुल्लिग है।

शब्द	**बहुवचन**	**विकार**	**लिंग**
बात	बातें	हाँ	स्त्रीलिंग
पुत्र	पुत्र	नहीं	पुल्लिंग
कोशिश	कोशिशें	हाँ	स्त्रीलिंग
खिड़की	खिड़कियाँ	हाँ	स्त्रीलिंग
इमारत	इमारतें	हाँ	स्त्रीलिंग
पुस्तक	पुस्तकें	हाँ	स्त्रीलिंग
पहाड़	पहाड़	नहीं	पुल्लिंग
अखबार	अखबार	नहीं	पुल्लिंग
स्कूल	स्कूल	नहीं	पुल्लिंग
हवा	हवाएँ	हाँ	स्त्रीलिंग
कुत्ता	कुत्ते	नहीं	पुल्लिंग
पत्ता	पत्ते	नहीं	पुल्लिंग

नोट : ऊपर में पंखा का बहुवचन पंखे, दरवाजा का दरवाजे, कुत्ता का कुत्ते तथा पत्ता का पत्ते में 'ए' (े) आया है न कि 'एँ' अतः ये पुल्लिंग होंगे, स्त्रीलिंग नहीं।

लिंग परिवर्तन

- हिन्दी में पुल्लिंग संज्ञाओं को स्त्रीलिंग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों (शब्दांशों) का प्रयोग होता है, उन्हें 'स्त्रीवाची प्रत्यय' कहते हैं।
- आ, आनी, आइन, इका, इया, इन, इनी, ई, नी आदि स्त्रीवाची प्रत्यय है जिन्हें शब्दों में जोड़कर पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।

पुल्लिंग का स्त्रीलिंग में निर्माण		
प्रत्यय / नियम	**उदाहरण**	
अ' को 'आ' में बदलकर	छात्र - छात्रा सुत - सुता	पूज्य - पूज्या वृद्ध - वृद्धा
'अ' को 'ई' में बदलकर	देव - देवी गोप - गोपी मेंढ़क - मेंढ़की	पुत्र - पुत्री ब्राह्मण - ब्राह्मणी दास - दासी
'आ' को 'ई' में बदलकर	नाना - नानी घोड़ा - घोड़ी रस्सा - रस्सी	लड़का - लड़की बेटा - बेटी चाचा- चाची
'आ' को 'इया' में बदलकर	बूढ़ा - बुढ़िया कुत्ता - कुतिया बेटा - बिटिया	चूहा - चुहिया डिब्बा - डिबिया लोटा - लुटिया
प्रत्यय 'अक' को 'इका' में बदलकर	बालक - बालिका नायक- नायिका गायक - गायिका	लेखक - लेखिका पाठक - पाठिका विधायक - विधायिका
'आनी' प्रत्यय लगाकर	देवर - देवरानी सेठ - सेठानी	चौधरी - चौधरानी जेठ - जेठानी
'नी' प्रत्यय लगाकर	शेर - शेरनी जाट - जाटनी ऊँट - ऊँटनी	मोर - मोरनी सिंह - सिंहनी भील - भीलनी
'ई' के स्थान पर 'इनी' लगाकर	हाथी - हथिनी तपस्वी - तपस्विनी स्वामी - स्वामिनी	
'इन' प्रत्यय लगाकर	माली - मालिन धोबी - धोबिन कुम्हार- कुम्हारिन	चमार - चमारिन नाई - नाइन सुनार - सुनारिन
'आइन' प्रत्यय लगाकर	चौधरी - चौधराइन ठाकुर - ठकुराइन मुंशी - मुंशियाइन	
'वान' के स्थान पर 'वती' लगाकर	गुणवान - गुणवती भगवान - भगवती भाग्यवान - भाग्यवती	पुत्रवान - पुत्रवती बलवान - बलवती सत्यवान - सत्यवती

Toppersnotes
Unleash the topper in you

'मान' के स्थान पर 'मती' लगाकर	श्रीमान् - श्रीमती बुद्धिमान् - बुद्धिमती आयुष्मान् - आयुष्मती
'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर	कर्त्ता - कर्त्री नेता - नेत्री दाता – दात्री
शब्द के पूर्व में 'मादा' शब्द लगाकर	खरगोश - मादा खरगोश भेड़िया - मादा भेड़िया भालू - मादा भालू
भिन्न रूप वाले कतिपय शब्द	कवि - कवयित्री वर - वधू विद्वान - विदुषी वीर - वीरांगना मर्द - औरत साधु - साध्वी दुल्हा - दुल्हन नर - नारी बैल - गाय राजा - रानी पुरुष - स्त्री भाई - भाभी/ बहिन बादशाह - बेगम युवक - युवती ससुर - सास

<u>महत्वपूर्ण तथ्य</u>

1. तारा, देवता, व्यक्ति, आदि शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग होते हैं किन्तु हिन्दी में पुल्लिंग।
2. आत्मा, बूँद, देह, बाहू, आदि शब्द संस्कृत में पुल्लिंग हैं किन्तु हिन्दी में स्त्रीलिंग।
3. संस्कृत में 'इमा' प्रत्यान्तक शब्द यथा-महिमा, गरिमा, लघिमा, सीमा, आदि पुल्लिंग होते हैं किन्तु हिन्दी में ये तत्सम शब्द होते हुए भी स्त्रीलिंग हैं।
4. 'अ' प्रत्यान्तक यथा - जय, विजय, पराजय आदि संस्कृत में पुल्लिंग होते हैं किन्तु हिन्दी में स्त्रीलिंग।
5. कृत और तद्धित प्रत्ययों से बने विशेषण या कर्तृवाच्य शब्द स्त्रीलिंग या पुल्लिंग शब्द के साथ यथावत ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे - आकर्षक दृश्य या घटना, देदीप्यमान धार्मिक संगठन या संस्था, धर्मज्ञ प्रकाश या ज्योति, परिचित पुरुष या महिला और पुरुष या नारी
6. सर्वनाम में लिंग के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता है।
7. निम्न पदवाची शब्दों में भी लिंग परिवर्तन नहीं होता। राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मंत्री, डाक्टर, मैनेजर, प्रिंसिपल ।
8. संस्कृत में पुल्लिंग व स्त्रीलिंग के अतिरिक्त नपुंसकलिंग भी होता है ।

Unleash the topper in you

4
CHAPTER

वचन

➢ वह शब्द जिससे किसी विकारी शब्द की संख्या का बोध होता हो, जिससे यह पता चले कि वह एक के लिए प्रयुक्त हुआ है अथवा अधिक के लिए, वचन कहलाता है।

✓ लड़का, लड़की, कुत्ता, घोड़ा, आम आदि - एक का बोध

✓ लड़के, लड़कियाँ, कुत्ते, घोड़े, आप लोग आदि - अनेक का बोध

वचन के प्रकार

एक वचन

शब्द के जिस रूप से केवल एक ही संख्या का बोध होता हो, एकवचन कहलाता है।

जैसे - लड़का, राधा, पेन्सिल, बिल्ली आदि ।

बहुवचन

संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक संख्या का बोध हो, बहुवचन कहलाता है।

जैसे - लड़के, बिल्लियाँ, पुस्तकें, सखियाँ आदि ।

वचन की पहचान

पहचान के नियम	**उदाहरण**
वचन की पहचान संज्ञा अथवा सर्वनाम या विशेषण पद से ही हो सकती है ।	लड़का खाना खा रहा है। (एकवचन) लड़के खाना खा रहे हैं। (बहुवचन)
यदि वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण पद से न हो, तो क्रिया से हो जाती है	ऊँट बैठा है। (एकवचन) ऊँट बैठे हैं। (बहुवचन)
कुछ शब्द ऐसे हैं जो हमेशा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं	जैसे - प्राण, होश, हस्ताक्षर, लोग, वाल, दर्शन, आँसू इत्यादि। **प्राण -** ऐसी हालत में उसके प्राण निकल जाएंगे। **होश -** राम के तो होश ही उड़ गए। **हस्ताक्षर -** मैंने अभी तक हस्ताक्षर नहीं किए हैं। **लोग -** लोग जानते हैं कि देव का कोई कसूर नहीं हैं।
एकवचन सर्वनाम 'तू' का बहुत छोटे और बहुत प्रिय के लिए अथवा अपमानजनक प्रस्तुति के लिए प्रयोग किया जाता है अथवा एक व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है, इसके स्थान पर अब एक व्यक्ति के लिए 'तुम' का सम्बोधन प्रचलित हो गया है।	तुम घर जा रहे हो । (एकवचन – केवल एक व्यक्ति के लिए)
भाववाचक संज्ञाएँ एवं धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयोग की जाती हैं	आजकल सोना सस्ता है।

वचन परिवर्तन

- हिन्दी व्याकरण के अनुसार एक वचन शब्दों को बहुवचन में परिवर्तित करने हेतु कुछ नियमों का उपयोग किया जाता है। ये नियम निम्न हैं -

नियम	उदाहरण
'आ' को 'ए' में बदलकर	कमरा - कमरे, लड़का - लड़के, बस्ता - बस्ते, बेटा - बेटे, पपीता - पपीते, रसगुल्ला - रसगुल्ले
'अ' को 'एँ' में बदलकर	पुस्तक - पुस्तकें, दाल - दालें, राह - राहें,
'ई' वाले शब्दों के अन्त में 'इयाँ' लगाकर	दवाई - दवाइयाँ, लड़की - लड़कियाँ, साड़ी - साड़ियाँ, स्त्री - स्त्रियाँ, नदी - नदियाँ, खिड़की - खिड़कियाँ।
स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में आए 'या' को 'याँ' में बदलकर-	चिड़िया - चिड़ियाँ, डिबिया - डिबियाँ, गुड़िया - गुड़ियाँ,
स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में आए 'उ', 'ऊ' के साथ 'एँ' लगाकर	वधू - वधुएँ, वस्तु - वस्तुएँ, बहू - बहुएँ।
इ, ई स्वरान्त वाले शब्दों के साथ 'यों' लगाकर तथा 'ई' की मात्रा को 'इ' में बदलकर	जाति - जातियों, रोटी - रोटियों, अधिकारी - अधिकारियों, लाठी - लाठियों, नदी - नदियों, गाड़ी - गाड़ियों।
एकवचन शब्द के साथ, जन, गण, वर्ग, वृन्द, हर, मण्डल, परिषद् आदि लगाकर।	**गण -** पाठकगण, छात्रगण, नेतागण, मंत्रिगण **वर्ग -** अधिकारीवर्ग, शासकवर्ग, धनीवर्ग, छात्रवर्ग **जन -** वृद्धजन, भक्तजन, गुरुजन, स्त्रीजन **जाति -** मनुष्यजाति, स्त्रीजाति, मानवजाति, पुरुषजाति **वृंद -** पाठकवृन्द, शिक्षकवृन्द, नारीवृन्द, छात्रवृन्द **लोग -** आपलोग, डॉक्टरलोग, विद्यार्थीलोग, छात्रलोग **दल -** विद्यार्थीदल, छात्रदल, नेतादल, स्त्रीदल
आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'आ' के साथ 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है।	लता – लताएँ, माता – माताएँ, दिशा – दिशाएँ, कन्या – कन्याएँ, महिला - महिलाएँ , समस्या - समस्याएँ, भाषा -भाषाएँ, शाखा -शाखाएँ, अध्यापिका - अध्यापिकाएँ

वचन से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण नियम :

- सम्बोधन शब्दों में 'औं' न लगा कर 'ओ' की मात्रा ही लगानी चाहिए ।
  - ✓ **जैसे -** भाइयो ! बहनो ! मित्रो ! बच्चो ! साथियो !
- पारिवारिक सम्बन्धों के वाचक आकारान्त देशज शब्द भी बहुवचन में प्रायः यथावत् ही रहते हैं।
  - ✓ **जैसे -** चाचा (न कि चाचे) माता, दादा बाबा, किन्तु भानजा, व भतीजा व साला से भानजे, भतीजे व साले शब्द बनते हैं।
- विभक्ति रहित आकारान्त से भिन्न पुल्लिंग शब्द कभी भी परिवर्तित नहीं होते।
  - ✓ **जैसे -** बालक, फूल, अतिथि, हाथी, व्यक्ति, कवि, आदमी, संन्यासी, साधु, पशु, जन्तु, डाकू, उल्लू, लड्डू, रेडियो, फोटो, मोर, शेर, पति, साथी, मोती, गुरु, शत्रु, भालू, आलू, चाकू
- विदेशी शब्दों के हिन्दी में बहुवचन हिन्दी भाषा के व्याकरण के अनुसार बनाए जाने चाहिए।
  - ✓ **जैसे -** स्कूल से स्कूलें न कि स्कूल्स, कागज से कागजों न कि कागजात।

Unleash the topper in you

- भगवान के लिए या निकटता सूचित करने के लिए 'तू का प्रयोग किया जाता है।
    - **जैसे -** हे ईश्वर! तू बड़ा दयालु है।
- निम्न शब्द सदैव एक वचन में ही प्रयुक्त होते हैं।
    - **जैसे -** जनता, वर्षा, हवा, आग
- प्रत्येक, हरएक, हर, कोई, जनता, वर्षा, आग, पुलिस, भीड़ का प्रयोग सदा एक वचन में ही होता है।
    - **जैसे -** प्रत्येक व्यक्ति, हरएक कुआँ आदि।
- द्रव्यवाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग प्रायः एक वचन में होता है।
    - **जैसे –**
        - उसके पास बहुत सोना है।
        - मेरे पास काफी धन है।
        - लोहा एक उपयोगी धातु है।
- दर्शन, आँसू, प्राण, अक्षत, ओठ, दम, लोग, होश, भाग्य, हस्ताक्षर, बाल, रोम आदि शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में होता है।
    - **जैसे -**
        - उनके प्राण निकल गये।
        - उनके दर्शन हुए।
        - समाचार सुनकर होश उड़ गए।
        - आँसू टपक पड़े ।
        - तुमलोग कब आए ?
        - मैने कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।
- आदर या सम्मान प्रकट करने के लिए 'एकवचन' के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है।
    - जैसे –
        - गाँधी जी चम्पारण आये थे।
        - नेहरू जी महान विद्वान थे।
        - मेरे पिता जी लम्बे है।
- भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग प्रायः एकवचन में होता है।
    - जैसे –
        - सत्य की ही विजय होती है।
        - तुम झूठ नहीं बोले।

Toppersnotes
Unleash the topper in you